5 हार की जीत

माँ को अपने बेटे, किसान को अपने लहलहाते खेत, गुरु को अपने शिष्य और साहूकार को अपने देनदार को देखकर जो आनंद प्राप्त होता है, वही आनंद बाबा भारती को अपने घोड़े को देखकर होता था। भगवत् भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुंदर और बड़ा बलवान था। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में नहीं था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते थे। अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था। वह गाँव से बाहर छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। सुलतान से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। वे कहते थे कि सुलतान ऐसे चलता है, जैसे घनघटा को देखकर मोर नाचता हो। जबतक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर वे न लगा लेते, तब तक उन्हें चैन न आता।

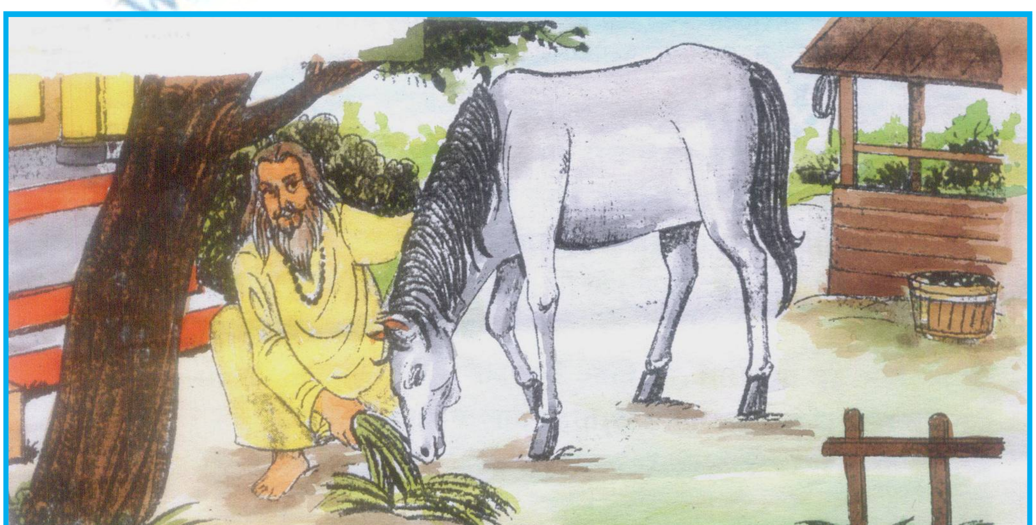

खड्गसिंह उस इलाके का कुख्यात डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

एक दिन दोपहर के समय वह बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा– ''खड्गसिंह क्या हाल है?''

''आपकी दया है।'' – खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया।

बाबा भारती ने पूछा – ''कहो, फिर इधर कैसे आना हुआ?''

''सुलतान की चाह खींच लाई, बाबा!'', खड्गसिंह ने उत्तर दिया।

बाबा भारती बोले–''बड़ा विचित्र जानवर है, देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।''

''मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'' – खड्गसिंह बोला।

बाबा भारती बोले–''उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।''

''कहते हैं, देखने में बड़ा सुंदर है।'' – खड्गसिंह ने बोला।

बाबा भारती बोले–''जो एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।''

''बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो गया हूँ।''–खड्गसिंह बोला।

बाबा और डाकू खड्गसिंह अस्तबल में गये। बाबा ने घोड़ा दिखाया गर्व से और खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से आज तक न गुजरा था। वह सोचने लगा–''भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या मतलब।'' कुछ देर तक वह आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् हृदय में हलचल होने लगी, वह बालकों की तरह अधीरता से बोला–''परंतु बाबाजी, जब तक इसकी चाल न देखी तो क्या देखा।''

बाबाजी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनकर उनका हृदय फूला न समाया। घोड़े को खोलकर बाहर लाये और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक वे उचककर सवार हो गये। घोड़ा वायु–वेग से दौड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाती, वह उस पर अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था, रुपया था और आदमी भी थे। जाते–जाते वह बाबा से बोला– ''बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास नहीं रहने दूँगा।''

बाबा भारती घबरा गये। अब उन्हें रात में नींद नहीं आती थी। सारी रात वह अस्तबल की

रखवाली करते। प्रतिक्षण उन्हें खड्गसिंह का भय लगा रहता। कई मास बीत गये। किंतु वह नहीं आया। यहाँ तक की बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गये और इस भय को स्वप्न के भय के समान मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता थी। वे कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन–ही–मन फूले न समाते थे।

अचानक एक ओर से आवाज आई –''ओ बाबा, इस कंगले की बात भी सुनते जाना।''

इस आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया और देखा कि एक अपाहिज वृक्ष की छाया में कराह रहा है। वे बोले–''तुम्हें क्या कष्ट है?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा–''बाबा, मैं दुखियारा हूँ, मुझ पर रहम करो। रामावाला यहाँ से तीन मील की दूरी पर है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।''

बाबा ने पूछा –''वहाँ तुम्हारा कौन है?''

''आपने दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती घोड़े से उतरकर उसे घोड़े पर बैठा लिया और स्वयं घोड़े की लगाम पकड़कर धीरे–धीरे चलने लगे।

अचानक उन्हें झटका लगा और लगाम उनके हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठ गया है और घोड़े को दौड़ाये लिये जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल पड़ी– वह अपाहिज खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर चुप रहे और उसके पश्चात् निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर कहा ''जरा ठहर जाओ।''

''बाबाजी, अब यह घोड़ा न दूँगा।''

बाबा बोले–''परंतु तुम मेरी एक बात सुनते जाओ खड्गसिंह! मैं एक प्रार्थना करता हूँ, अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जायेगा।''

Abdiel Solutions
Empowering Technologies

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

''बाबाजी, आज्ञा कीजिये! मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।''

''अब तुम घोड़े का नाम मत लो। मैं तुमको इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यही है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'' बाबा ने कहा।

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे इस घोड़े को लेकर वहाँ से भागना पड़ेगा। परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है, बाबा का?

बाबा भारती ने कहा- ''लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी अपाहिज पर विश्वास न करेंगे।'' यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से मुँह मोड़ लिया। जैसे उससे कोई संबंध ही न हो। बाबा भारती चले गये, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे।

रात्रि के अन्धकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँव में कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई नहीं देता था। खड्गसिंह सुलतान की लगाम पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला हुआ था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी अथवा डाके का भय न था। खड्गसिंह ने

© RSTBDC NOT TO BE PUBLISHED WEB COPY

आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंढे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन भर का बना दिया था। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे। मानो कोई पिता बहुत दिनों के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

-सुदर्शन

शब्दार्थ :

देनदार - कर्जदार
असह्य - असहनीय
छवि - शोभा, सुन्दरता
अंकित - लिखा हुआ
बाँका - अनोखा एवं सुन्दर
करुणा - दया
विस्मय - आश्चर्य
प्रयोजन - मतलब, उपयोग

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से-

1. बाबा भारती अपने घोड़े सुलतान से किस प्रकार स्नेह करते थे?
2. बाबा भारती के घोड़े को देखने के लिए खड्गसिंह क्यों अधीर हो उठा?
3. घोड़ा देखने के बाद खड्गसिंह के दिमाग में क्या उथल-पुथल होने लगी?
4. खड्गसिंग ने बाबा भारती के घोड़े को पाने के लिए किस प्रकार का रूप बदला?

© BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

5. पाठ के किन वाक्यों से पता चलता है कि बाबा भारती को अपने घोड़े पर गर्व था?

6. **सही वाक्यों के सामने सही (√) एवं गलत वाक्यों के सामने गलत (x) का निशान लगाइए।**

(क) बाबा भारती का घोड़ा कमजोर एवं दुर्बल था। ( )

(ख) घोड़ा का नाम सुलतान था। ( )

(ग) खड्गसिंह को बाबा भारती का घोड़ा पसंद था। ( )

(घ) बाबा भारती ने सुलतान से बिछुड़ने पर प्रसन्नता व्यक्त की। ( )

(ङ) खड्गसिंह ने चुपके से घोड़ा को अस्तबल में बाँध दिया। ( )

पाठ से आगे&

1. ''लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी अपाहिज पर विश्वास न करेंगे।'' बाबा भारती के इस वक्तव्य का क्या अभिप्राय है ?
2. खड्गसिंह ने चुपके से रात में सुलतान को वापस अस्तबल में बाँध दिया। ऐसा उसने क्यों किया?
3. बाबा भारती के किस व्यवहार से खड्गसिंह के सोच में परिवर्तन हुआ?
4. आपकी प्रिय वस्तु कोई छिनने का प्रयास करे तो आप क्या करेंगे?
5. अगर आपको बाबा भारती से घोड़ा लेना होता तो आप क्या करते?
6. कहानी का कोई दूसरा शीर्षक क्या हो सकता है?

व्याकरण

1. (क) **किसान** अपने लहलहाते खेतों को देखकर बहुत प्रसन्न होता है।

(ख) **खड्गसिंह** एक कुख्यात डाकू था।

(ग) बाबा भारती के मुख पर **प्रसन्नता** थी।

(घ) उन्होंने ठंढे **जल** से स्नान किया।

(ङ) सुलतान को देखने के लिए **भीड़** लगी रहती थी।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमशः जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, द्रव्यवाचक एवं समूहवाचक संज्ञा है। इस प्रकार संज्ञा के पाँच भेद हैं।

© BSTBPC WELCOPY NOT TO BE PUBLISHED

निम्नलिखित वाक्यों में मोटे शब्दों को सामने के कोष्ठक में संज्ञा के भेद के रूप में लिखिए।

(i) वह **ईमानदारीपूर्वक** काम करता है। ( )

(ii) **सुलतान** बड़ा सुन्दर और बलवान था। ( )

(iii) कार्तिक पूर्णिमा के दिन सोनपुर में **मेला** लगता है। ( )

(iv) **दूध** स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। ( )

(v) **बस** घाटी से होकर गुजरती है। ( )

2. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए -

(क) पश्चात् -

(ख) महात्मा -

(ग) निश्चय -

(घ) प्रशंसा -

(ङ) अपाहिज -

(च) स्वीकार

3. इस पाठ में घोड़े की विशेषता से संबंधित जो शब्द हैं उन्हें चुनकर लिखिए।

4. निम्नांकित मुहावरों का अर्थ लिखिए :-

(क) लट्टू होना -

(ख) फूले न समाना -

(ग) हृदय पर साँप लोटना -

(घ) मुँह मोड़ लेना -

कुछ करने को-

1. आपके आस-पास कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने व्यवहार से आपको प्रभावित करता है। उसका पता कीजिए और उसकी दिनचर्या को लिखिए।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED